केवल पढ़ने के लिए

सच्चा धर्म

प्रेरक प्रसंग

एक बार आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी सैर करके खेतों से लौट रहे थे कि उन्हें खेतों से किसी स्त्री के चीखने की आवाज़ सुनाई दी। उन्हें लगा कि स्त्री अवश्य किसी मुसीबत में है। वे दौड़कर घटनास्थल पर पहुँचे तो देखा कि एक सर्प ने स्त्री के पैर में डस लिया है और वह दर्द से कराह रही है। उन्होंने पैर के ऊपरी भाग को कसकर बाँधने के लिए इधर-उधर किसी वस्त्र या रस्सी को ढूँढ़ा लेकिन उन्हें कुछ दिखाई न दिया।

उन्होंने शीघ्रता से अपना जनेऊ उतारा और स्त्री के पैर पर बाँध दिया। फिर साँप द्वारा डसे गए भाग को धीरे से काटा और दबाकर विषाक्त रक्त बाहर निकाल दिया। तब तक वहाँ कुछ और लोग आ गए। उन्होंने देखा तो द्विवेदी जी को फटकारने लगे- "तुमने ब्राह्मण होकर भी अपना पवित्र जनेऊ एक अछूत स्त्री के पैर में बाँध दिया।"

आचार्य ने उनकी बात की कोई परवाह नहीं की, अपितु उनसे कहने लगे- "जनेऊ किसी के प्राणों से बढ़कर तो नहीं हो सकता। हम सब एक ही ईश्वर की संतान हैं। इसलिए प्राणियों में भेदभाव करना उचित नहीं है। विपत्ति में प्राणिमात्र की सहायता करना ही सच्चा धर्म है।

आत्म-विश्वास

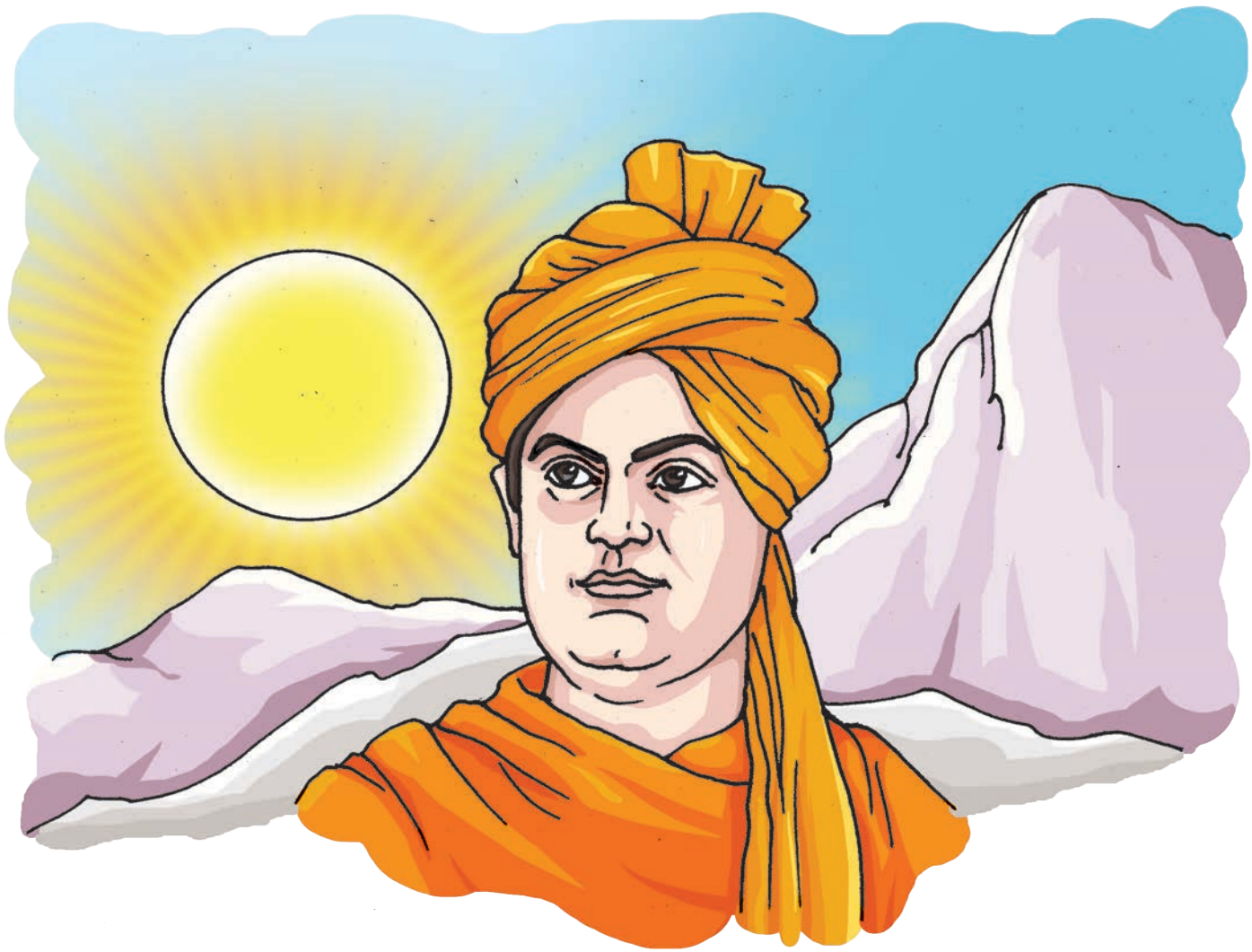

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि आत्म-विश्वास जैसा मित्र नहीं है। आत्म-विश्वास का अर्थ है– स्वयं पर विश्वास रखना। कुछ लोग थोड़ी सी विपत्ति या कठिनाई में भी घबराकर हार मान लेते हैं। लेकिन जिनमें आत्म-विश्वास होता है, वे बड़े से बड़े संकट में भी विचलित नहीं होते।

आत्म-विश्वास के लिए आवश्यक है कि अपने भीतर छिपे हुए गुणों व प्रतिभा को पहचानें। अपने अवगुणों को भी जानें व उनसे मुक्ति पाने का प्रयास करें, लेकिन मन में कभी भी हीन-भावना न आने दें।

यदि आप में आत्म-विश्वास है तो पर्वत जैसी विकराल समस्या भी राई जैसी दिखने लगेगी। यह आत्म-विश्वास कहीं और से नहीं आता, अपितु इसे स्वयं अपने भीतर पैदा करना पड़ता है।

आओ, खुशी मनाएँ

शिक्षण-संकेत : छात्रों को त्योहार पहचानने के लिए कहें तथा दिए गए स्थान पर त्योहार का नाम लिखने के लिए कहें।

रक्षा-बंधन क्रिसमस बैसाखी दीवाली होली लोहड़ी
शिवरात्रि जन्माष्टमी ईद पोंगल ओणम गणेश-चतुर्थी